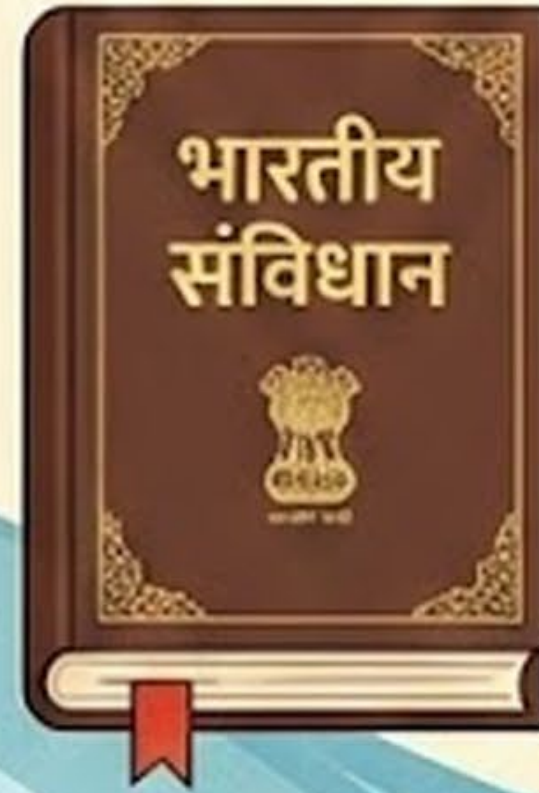




वैदिक कालीन चिंतन प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक बीज

26 जनवरी 1950



विश्व शांति के सिद्धांत



संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY



भारतीय परम्पराTM
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-५, अंक-५४, जनवरी-२०२६

सोशल कनेक्शन



हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें



www.bhartiyaparampara.com



paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य (आपका कीमती समय)

जनवरी २०२६

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत्-२०८२, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शिशिर

सोम

05 माघ कृ.
द्वितीया

12 माघ कृ.
नवमी, राष्ट्रीय
युवा दिवस, स्वामी
विवेकानंद जयंती

19 माघ शु.
प्रतिपदा, माघ
गुप्त नवरात्रि
प्रारम्भ

26 माघ शु.
अष्टमी, मासिक
दुर्गा अष्टमी
गणतंत्र दिवस

मंगल

06 माघ कृ.
तृतीया, लंबोदर
संकष्टी चतुर्थी,
संकट/तिल चौथ

13 माघ कृ.
दशमी,
लोहड़ी

20 माघ शु.
द्वितीया

27 माघ शु.
नवमी, माघ
गुप्त नवरात्रि
समाप्त

बुध

07 माघ कृ.
पंचमी

14 माघ कृ.
एकादशी, षटतिला
एकादशी व्रत, पोगल
मकर संक्रांति,
उत्तरायण

21 माघ शु.
तृतीया

28 माघ शु.
दशमी

गुरु

01 पौष शु.
त्रयोदशी, गुरु
प्रदोष व्रत

08 माघ कृ.
षष्ठी

15 माघ कृ.
द्वादशी,
बिहु

22 माघ शु.
चतुर्थी, गौरीगणेश
चतुर्थी, रामलला
प्रतिष्ठा दिवस

29 माघ शु.
एकादशी, जया
एकादशी व्रत

शुक्र

02 पौष शु.
चतुर्दशी

09 माघ कृ.
सप्तमी

16 माघ कृ.
त्रयोदशी, शुक्र
प्रदोष व्रत

23 माघ शु.
पंचमी,
वसंत पंचमी, मां
सरस्वती जयंती

30 माघ शु.
द्वादशी/त्रयोदशी,
तिल द्वादशी,
शुक्र प्रदोष व्रत

शनि

03 पौष शु.
पूर्णिमा,
पौष पूर्णिमा व्रत

10 माघ कृ.
अष्टमी, मासिक
कृष्ण जन्माष्टमी

17 माघ कृ.
चतुर्दशी,
मासिक शिवरात्रि

24 माघ शु.
षष्ठी,
स्कन्द षष्ठी

31 माघ शु.
त्रयोदशी/
चतुर्दशी

रवि

04 माघ कृ.
प्रतिपदा

11 माघ कृ.
अष्टमी

18 माघ कृ.
अमावस्या,
मौनी अमावस्या

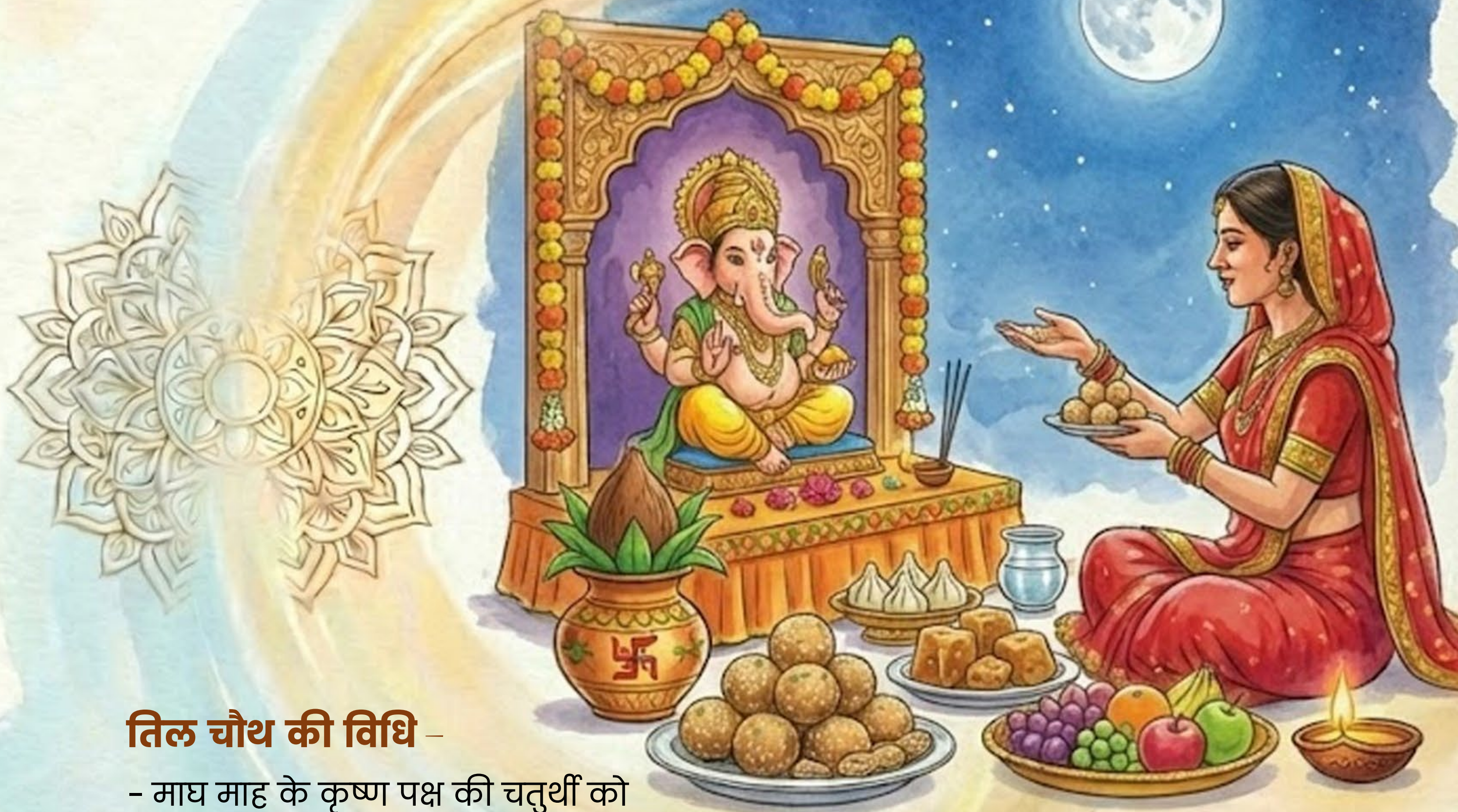
25 माघ शु.
सप्तमी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

तिल चौथ, माही चौथ और संकट चौथ

एक बार माँ पार्वती ने श्री गणेश से पूछा, हे पुत्र! माघ बदी चौथ जिसे तिल चौथ, माही चौथ और संकट चौथ भी कहा जाता है। इस व्रत का विधान क्या है और इस चौथ का नाम तिल चौथ क्यों हुआ? तब रिद्धि सिद्धि के दाता गजानन ने बताया कि इस व्रत को करने से समस्त बाधाएँ दूर होती हैं साथ ही संतान की प्राप्ति के लिए तिल चौथ माता की पूजा करते हैं। जिन माताओं के संतान है वह इस व्रत को अपनी संतान की खुशहाली के लिए करें।

इस दिन **भगवान भालचंद्र गणेश के स्वरूप और तिल चौथ माता** की पूजा होती है और उनको **तिलकुटे का भोग** लगाया जाता है। भारत में इस व्रत को उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में मनाया जाता है।



तिल चौथ की विधि –

- माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को यह व्रत किया जाता है, इस दिन महिलाएँ निर्जला व्रत रखती हैं।
- इस दिन स्नानादि के बाद पहले पूजा की थाली तैयार करें जिसमें दीया, पानी का कलश, पूजा के फूल, कुंकुम, चावल, रोली, मेहँदी आदि रखें।
- फिर तिल और गुड़ को कूट कर (तिलकुटा) प्रसाद तैयार करें।
- इसके बाद एक लकड़ी का पाटा (चौकी) ले उस पर लाल रंग का स्वच्छ कपड़ा बिछाए फिर गणेश और चौथ माता की मूर्ति स्थापित करें।
- विधिवत पूजा करें और भोग लगाए, इसके बाद गणेश मन्त्र का जाप करें -

"गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।

उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥"

- अंत में तिल चौथ माता की कथा पढ़ें या सुनें www. (तिल चौथ की कहानी सुनें)

लोहड़ी: ऊर्जा, उल्लास और कृतज्ञता का पावन पर्व

लोहड़ी भारत के उत्तर क्षेत्र, विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में मनाया जाने वाला एक प्रमुख लोकपर्व है। यह पर्व हर वर्ष 13 जनवरी को मनाया जाता है और शीत ऋतु के अंत तथा सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक माना जाता है। लोहड़ी केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि प्रकृति, कृषि, ऋतु परिवर्तन और सामूहिक आनंद से जुड़ा सांस्कृतिक उत्सव है।

लोहड़ी मनाने के पीछे कई पौराणिक और सामाजिक कारण निहित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से, यह पर्व 'दुल्ला भट्टी' की वीरता को समर्पित है, जिन्होंने निर्बलों की रक्षा कर समाज में मानवता का संदेश दिया था।

आध्यात्मिक रूप से, यह अग्नि देव और सूर्य देव के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन है। पौष मास की ठिठुरती ठंड के अंत और माघ के आगमन का यह संगम, जीवन में नई ऊर्जा के संचार का प्रतीक माना जाता है। यह समय किसानों के लिए स्वर्ण के समान चमकती रबी की फसल की कटाई के उल्लास का होता है।

लोहड़ी कैसे मनाई जाती है?

लोहड़ी की शाम को खुले स्थान पर अग्नि प्रज्वलित की जाती है। परिवार और समाज के लोग आग के चारों ओर इकट्ठा होकर परिक्रमा करते हैं। अग्नि में तिल, गुड़, मूंगफली, रेवड़ी, पॉपकॉर्न और मक्का अर्पित किए जाते हैं, जिन्हें प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। यह अर्पण समृद्धि, उर्वरता और खुशहाली का प्रतीक है।

इस अवसर पर पारंपरिक लोकगीत गाए जाते हैं और भांगड़ा व गिद्धा जैसे लोकनृत्य किए जाते हैं। ढोल की थाप पर नृत्य करते हुए लोग अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। बच्चों के लिए यह पर्व विशेष उत्साह का कारण बनता है, क्योंकि उन्हें मिठाइयाँ और उपहार मिलते हैं।

घर में विशेष रूप से सरसों का साग और मक्के की रोटी बनाई जाती है, जो पंजाब की पारंपरिक पहचान है। आपसी मेल-जोल, हँसी-खुशी और सामूहिक भोज के माध्यम से सामाजिक एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है।

षटतिला एकादशी व्रत: महत्व, पूजा विधि, कथा

भारतीय सनातन संस्कृति में एकादशी (ग्यारस) का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। हिंदू धर्म में एकादशी व्रत को भगवान विष्णु को समर्पित माना गया है। इन्हीं एकादशियों में षटतिला एकादशी अत्यंत पुण्यदायक और मोक्ष प्रदान करने वाली मानी जाती है।

षटतिला एकादशी माघ मास के कृष्ण पक्ष में आती है। अपने नाम के अनुरूप इस एकादशी में तिल का विशेष महत्व होता है। 'षट' का अर्थ है छः और 'तिला' का अर्थ है तिल। इस दिन तिल के छह प्रकार से प्रयोग किए जाते हैं, इसलिए इसे षटतिला एकादशी कहा जाता है। यह एकादशी शुभकारी एवं मंगलकारी मानी जाती है। यह दुर्भाग्य को समाप्त कर शुभ फल प्रदान करती है तथा मृत्यु के उपरांत साधक को मोक्ष प्रदान करती है।

भगवान विष्णु का पूजन तिल से करने का विशेष महत्व है। पूजन से पूर्व तिल मिश्रित जल से स्नान करना चाहिए। इससे शरीर निरोग रहता है तथा यदि कोई रोगी हो तो ईश्वर की कृपा से रोगों से मुक्ति मिलती है। तिल का अधिक से अधिक उपयोग करने से लाभ प्राप्त होता है।

षटतिला एकादशी व्रत: महत्व

यह व्रत शुभकारी और मंगलकारी माना जाता है। दुर्भाग्य और दरिद्रता का नाश करता है, पापों से मुक्ति और पुण्य की प्राप्ति होती है। मृत्यु के बाद मोक्ष प्रदान करने वाला व्रत माना गया है। माघ मास स्वयं में पवित्र होता है, अतः इस मास में किया गया व्रत कई गुना फलदायी होता है।

पूजन विधान

पुलस्त्य ऋषि ने दाल्भ्य ऋषि को इस व्रत के पूजन का विधान बताया था। इस विधान के अनुसार पूजन करने से सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं।



सर्वप्रथम तिल मिश्रित जल से स्नान करें। इसके पश्चात भगवान विष्णु का गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं तांबूल से पूजन करें। उड़द और तिल से मिश्रित खिचड़ी बनाकर भगवान को भोग अर्पित करें। रात्रि जागरण करें तथा हवन करें। हवन में 108 बार - “**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**” मंत्र का उच्चारण करते हुए आहुति दें।

भगवान विष्णु के साथ-साथ भगवान श्रीकृष्ण की भी पूजा की जाती है।

एकादशी मंत्र:

ॐ नारायणाय विद्महे। वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इस मंत्र का जाप करें। प्रातःकाल स्नान के बाद भगवान का पूजन करें, ब्राह्मणों को तिल युक्त भोजन कराएँ तथा दान दें। इसके पश्चात स्वयं पारण करें।

षटतिला एकादशी व्रत: कथा

एक बार नारद मुनि भ्रमण करते हुए भगवान विष्णु के दरबार में पहुँचे। वहाँ उन्होंने भगवान से षटतिला एकादशी के फल के विषय में प्रश्न किया। तब भगवान विष्णु ने कहा—मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूँ।

पृथ्वी लोक में एक ब्राह्मणी रहती थी, जो पूरी श्रद्धा और प्रेम से मुझे समर्पित थी। वह मेरे नाम के सभी व्रत करती थी तथा पूजन भी करती थी। एक बार उसने पूरे एक माह तक व्रत रखा, किंतु वह अन्नदान नहीं करती थी। मुझे चिंता हुई, क्योंकि मृत्यु के बाद उसे मेरे धाम में आना था। मैंने ब्राह्मण का रूप धारण कर भिक्षा हेतु उसके पास गया। उस ब्राह्मणी ने मिट्टी का एक पिंड उठाकर मुझे दान में दे दिया। मैं उसे लेकर चला आया। कालांतर में मृत्यु के बाद वह स्वर्ग लोक पहुँची, जहाँ उसे एक कुटिया मिली। कुटिया पूर्णतः खाली थी, केवल एक आम का वृक्ष वहाँ था।

वह मेरे पास आकर बोली—मैं पूर्णतः धर्मपरायण हूँ, फिर भी मुझे खाली कुटिया मिली है। मैंने उत्तर दिया—**तुमने जो दान दिया, वही तुम्हें प्राप्त हुआ। तुमने व्रत किया, किंतु दान नहीं किया।** उपाय पूछने पर मैंने उसे षटतिला एकादशी का विधान बताया। उसने विधि-विधान से व्रत एवं दान किया। परिणामस्वरूप उसकी कुटिया सभी प्रकार के वैभव से भर गई।

नारद मुनि यह कथा सुनकर प्रसन्न होकर चले गए। **जो व्यक्ति एकादशी के दिन यह कथा कहता या सुनता है, उसे पुण्य लाभ प्राप्त होता है।**

तिल का प्रयोग इस प्रकार करें:

- ❖ भगवान को तिल का प्रसाद अर्पित करें।
- ❖ तिल जल में डालकर सूर्य देव को अर्घ्य दें।
- ❖ तिल मिश्रित जल से स्नान करें।
- ❖ तिल का उबटन लगाएँ।
- ❖ तिल का दान करें।
- ❖ तिल का तिलक करें।
- ❖ तिल से हवन करें।
- ❖ ब्राह्मण को तिल का दान करें।
- ❖ तिल से तर्पण करें।
- ❖ स्वयं तिल का भोजन करें।

भोजन : व्रत में अन्य अन्न ग्रहण न करें। शकरकंद, बादाम, दूध, फल, साबूदाना, सेंधा नमक एवं काली मिर्च का प्रयोग करें।

एकादशी में निषेध : वृक्षों की पत्तियाँ न तोड़ें। बाल न कटवाएँ। चावल का सेवन पूर्णतः वर्जित है। किसी का दिया हुआ अन्न ग्रहण न करें। फलाहार में गोभी, शलजम और पालक का प्रयोग न करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें।

व्रत के नियम : एकादशी व्रत के नियम अत्यंत कठोर होते हैं, जिनका पालन आवश्यक है।

- ❖ प्रातः दातुन या पेस्ट का प्रयोग न करें। इसके स्थान पर नींबू, जामुन या आम के पत्ते चबाकर उँगली से दाँत साफ करें।
- ❖ पत्ते तोड़ना वर्जित है, अतः भूमि पर गिरे पत्तों का उपयोग करें।
- ❖ स्नान कर मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करें तथा यथाशक्ति दान करें।
- ❖ इस बात का विशेष ध्यान रखें कि त्रयोदशी लगने से पूर्व ही पारण कर लें।
- ❖ द्वादशी के दिन स्नान के बाद भगवान विष्णु का पूजन करें, ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान दें, तत्पश्चात ही व्रत का पारण करें।

इस प्रकार षटतिला एकादशी का व्रत कर पुण्य प्राप्त करें।

— अधिवक्ता श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, इंदौर (म.प्र.)



MODERN PROPERTY
Finding Your Place in the City



**Unlock Your Future.
Find Your Home.**

• Buy | Sell | Invest •
www.gharondaestate.com
98705 80810

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!



- ❖ व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर प्रत्येक माह के प्रारम्भ में **ई-पत्रिका का नया अंक** प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक प्राप्त न हुआ हो, तो कृपया हमें सूचित करें।
- ❖ ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए **नंबर 7303021123** को अपने मोबाइल में सेव करें और **व्हाट्सएप एवं टेलीग्राम ग्रुप** से जुड़ें।
- ❖ पत्रिका में जहाँ भी **सोशल मीडिया आइकॉन** दिए गए हैं, उन पर स्पर्श करने से आप सीधे संबंधित लिंक पर पहुँच सकते हैं।
- ❖ यदि ई-पत्रिका में कोई **त्रुटि नज़र आए तो कृपया हमें अवगत कराएँ।** साथ ही, यदि पत्रिका आपको पसंद आए तो इसे अपने **परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।**
- ❖ भारतीय परंपराओं को संरक्षित रखने एवं पत्रिका को और **अधिक सुरुचिपूर्ण** बनाने के लिए **आपके सुझाव और विचार** हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं।
- ❖ आप अपने क्षेत्र/समुदाय में हो रहे **पारंपरिक आयोजन या विशेष लेख** भी हमें भेज सकते हैं, ताकि उन्हें आगामी अंकों में प्रकाशित किया जा सके।
- ❖ पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए **विषय-वस्तु** पर आपके सुझाव (**जैसे - विशेषांक, लोककथाएँ, परंपरागत पर्व या व्यंजन**) हमें अवश्य लिखें।

मकर संक्रांति पर्व: सूर्य उत्तरायण का पावन उत्सव

जब सूर्य पौष माह से धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है तब मकर-संक्रांति होती है। संक्रांति के आते ही सूर्य उत्तरायण हो जाता है। माना जाता कि आज के दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि देव से मिलने जाते हैं। इस दिन ही गंगा की अमृत धारा धरा पर उतरी थी। शास्त्रों के अनुसार दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक है और उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात् सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है। इसलिए संक्रांति के दिन सूर्य देव की पूजा, स्नान, दान, श्राद्ध, तर्पण जैसे धार्मिक कार्यों के लिए बहुत उपयुक्त है।

उत्तरायण में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं।

मकर संक्रांति के दिन किया गया

दान 100 गुना पुण्यदायी होता है, इस दिन तिल, गुड़, खिचड़ी, उड़द दाल दान बहुत ही लाभदायक होता है।

इस दिन पितरों के लिए तिल से तर्पण करना चाहिए। साथ ही इस दिन शुद्ध घी एवं कम्बल का दान भी अति उत्तम है, जो कि इस श्लोक से ज्ञात होता है –

"माघे मासे महादेवः यो दास्यति घृतकम्बलम्।

स भुक्त्वा सकलान् भोगान् अन्ते मोक्षं प्राप्यति॥"

भारत की सांस्कृतिक विविधता का दर्शन मकर संक्रांति के पर्व में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसे देश के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न नामों और अनूठी परंपराओं के साथ मनाया जाता है। इस दिन कहीं जगहों पर लोग पतंग भी उड़ाते हैं, आकाश में उड़ती स्वतंत्र पतंगें यह अद्भुत नजारा आज के ही दिन देखने को मिलता है।

आइए जानते हैं कि भारत के विभिन्न राज्यों में मकर संक्रांति किस प्रकार मनाई जाती है।

www.

जब खेतों में नई फसल की हरियाली बिहू के रूप में उल्लास बनकर झूमती है और साधना, संयम व साधक की अंतर्गता गुप्त नवरात्रि में मौन शक्ति बनकर जागृत होती है।

उत्सव और तप,
दोनों जीवन के आवश्यक संतुलन हैं।

बिहू हमें परिश्रम, प्रकृति
और सामूहिक
आनंद का महत्व सिखाता है,

तो गुप्त नवरात्रि आत्मचितन, साधना
और आंतरिक शक्ति को जागृत
करती है।

आइए, इस पावन अवसर पर हम
प्रकृति के प्रति कृतज्ञ बनें,
संस्कृति से जुड़ें,
और भीतर की शक्ति को पहचानें।

उल्लास भी, उपासना भी —
यही भारतीय परंपरा की सुंदरता है।



2026: समय की देहरी पर जागरण का वर्ष

नए वर्ष का आगमन अक्सर केवल एक क्षणिक उत्सव की तरह दिखता है, पर वास्तव में वह समय के गहरे प्रवाह में वह बिंदु है **जहाँ बीता हुआ वर्ष अपनी थकान छोड़कर विलीन हो जाता है और नया वर्ष अपने अनाम भविष्य के साथ हमारे सम्मुख उपस्थित होता है।** 2026 की देहरी पर खड़े होकर यह प्रश्न कि **आगत वर्ष कैसा हो, केवल**

व्यक्तिगत नहीं रह जाता - वह हमारे राष्ट्रीय, सामाजिक और सामूहिक विवेक को भी छूता है।

कामना है कि यह वर्ष हमें स्वयं के भीतर लौटने का अवसर दे। मनुष्य अपनी ही गति, महत्वाकांक्षा और उपलब्धियों की परतों में इतना उलझ जाता है कि वह अपने मूल स्वरूप को भूलने लगता है। **2026 एक ऐसा शांतागार बने, जहाँ हम अपने अंतर्मन को सुन सकें - उन प्रश्नों को, जिन्हें हम वर्षों से टालते आए हैं; उन इच्छाओं को, जिन्हें हम परिस्थितियों के नाम पर दबाते रहे; और उन सच्चाइयों को, जिनसे सामना करना हमेशा कठिन लगता है। यह वर्ष हमें भीतर की धुंध को हटाकर स्वयं के प्रति ईमानदार होने का साहस दे।**

नया वर्ष हमारे संबंधों के समीकरणों में भी एक नयी कोमलता लाए। आधुनिक जीवन, यद्यपि सुविधाओं से भरपूर है, पर संवादों की गुणवत्ता में कहीं न कहीं क्षरण आया है। 2026 ऐसा वर्ष हो जिसमें हम पुनः सीख सकें कि किसी मनुष्य से बात करना केवल शब्दों का प्रयोग नहीं, बल्कि एक हृदय का दूसरे हृदय तक पहुँचना है। हम अपने प्रियजनों के साथ ही नहीं, समाज में मिले अनजानों के साथ भी **एक मनुष्य-से-मनुष्य संबंध स्थापित कर सकें - सम्मान, विनम्रता और उदारता के साथ।**

परिवर्तन की आकांक्षा केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती; वह अनिवार्य रूप से समाज तक फैलती है। हमारे राष्ट्रीय परिदृश्य में आज विचारों, मान्यताओं और दृष्टिकोणों का एक व्यापक संवाद चल रहा है - **कहीं तीखा, कहीं दार्शनिक, कहीं विसंगतियों से भरा।**

2026 ऐसा वर्ष बने जिसमें यह संवाद संघर्ष नहीं, सहमति का कोई नया आधार खोज सके। हम मतभेदों को द्वेष में नहीं, विमर्श में परिवर्तित कर सकें। ऐसे समय में जब समाज कई

परतों में विभक्त-सा दिखता है, यह वर्ष हमें याद दिलाए कि **राष्ट्र केवल भूगोल नहीं, बल्कि साझा स्मृतियों, मूल्यों और भविष्य की आकांक्षाओं का जीवित स्वरूप है।**

हमारे सामाजिक ताने-बाने में संवेदना की पुनर्स्थापना अत्यावश्यक है। प्रतिस्पर्धा ने मनुष्यता के भीतर से करुणा के स्वरों को धीमा कर दिया है। आगत वर्ष एक ऐसा वर्ष हो जिसमें हम समाज के सबसे मौन समूहों की आवाज़ सुन सकें - **उन स्त्रियों की, जिनकी क्षमताएँ अक्सर परिस्थितियों और पूर्वाग्रहों से दब जाती हैं; उन बच्चों की, जिनके सपनों को अवसर का आकाश अभी नहीं मिला; उन मजदूरों, किसानों, श्रमिकों की, जिनका श्रम हमारी सभ्यता का मूल आधार है; और उन बुजुर्गों की, जिनका अनुभव हमारे समय की सबसे बड़ी, पर सबसे उपेक्षित धरोहर है।**

यह वर्ष हमें यह भी याद दिलाए कि **विकास केवल निर्माण, आंकड़े और नयी संरचनाओं का नाम नहीं है; विकास वह है जिसमें मनुष्य स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करे।** राष्ट्र तभी आगे बढ़ता है जब सामाजिक न्याय, समान अवसर और पारदर्शिता उसके विकास की मूलभूत शर्तें बनती हैं। यह वर्ष इन सिद्धांतों को केवल नीतियों में नहीं, हमारे सामूहिक व्यवहार में स्थान दे।

कठिनाइयाँ आएँगी - राष्ट्रीय स्तर पर भी और व्यक्तिगत स्तर पर भी - पर हम उन कठिनाइयों को विघटन नहीं, सुदृढ़ता का अवसर समझ सकें। राष्ट्र और व्यक्ति, दोनों ही संघर्षों से गुजरकर ही अपनी क्षमता पहचानते हैं। इस वर्ष में यह परिपक्वता आए कि हम समस्याओं को शोर में नहीं डुबाएँ, बल्कि **समाधान की ओर बढ़ने वाला मार्ग खोजें - संवाद से, धैर्य से, और बुद्धिमत्ता से।**

और इस सबके बीच प्रकृति - हमारी श्वास, हमारा पर्यावरण, हमारी धरोहर - हमारे **राष्ट्रीय विवेक का अनिवार्य हिस्सा बने।** यह वर्ष हमें याद दिलाए कि वृक्ष, नदियाँ, पहाड़, पवन और मिट्टी केवल दृश्य नहीं, बल्कि भविष्य का आधार हैं। हम मानव और प्रकृति के बीच वह सम्बन्ध पुनर्स्थापित करें जिसमें उपभोग नहीं, सह-अस्तित्व प्रधान हो।

अंततः यह वर्ष हमारे स्वप्नों के लिए भी एक आश्रय बने। राष्ट्र का भविष्य उसके नागरिकों के स्वप्नों से बनता है। जब एक कवि अपनी कविता लिखता है, एक किसान अपनी मिट्टी को सींचता है, एक वैज्ञानिक अपनी खोज में रत होता है, एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को जान देता है—तभी राष्ट्र आगे बढ़ता है। **सन् 2026** ऐसा वर्ष हो जिसमें हर मनुष्य अपने भीतर छिपे सृजन को पहचान सके और उसे दुनिया के सम्मुख लाने का साहस पा सके।

कामना है कि **यह नया वर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं, बल्कि चेतना का जागरण बने -**

- ✓ ऐसा वर्ष जिसमें शब्द गौण हो जाएँ और मनुष्य अपनी शैली में, अपने कर्मों में, अपने दृष्टिकोण में नया अर्थ रच सके।
- ✓ ऐसा वर्ष जिसमें व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों यात्राएँ एक गहरे, शांत, और अधिक मानवीय भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ।

2026 केवल आए नहीं—हमारी संवेदना, हमारी बुद्धि और हमारे सामूहिक भविष्य में उतर सके।

- प्रो.(डॉ.) मनमोहन प्रकाश जी श्रीवास्तव, इंदौर (म.प्र.)

2026: समय की देहरी पर



देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है। पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : 😊 मात्र आपकी मुस्कान

📞 **8610502230**
(केवल संदेश हेतु)

कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।





भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

अगर आप अपने
'शब्दों के मोती'



भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना

चाहते हैं तो हमें सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा



paramparabhartiya@gmail.com



शुरुवाती दिनों में चन्द्रमोहन नाम से दर्शन में रुचि हो जाने पर ओशो, घर बार छोड़ अलग अलग धर्म और विचार धारा पर पूरे देश में जब प्रवचन देना शुरू किया तब लोग उन्हें आचार्य रजनीश के नाम से जानने लगे। लेकिन नवसन्यास आन्दोलन शुरुआत करने के पश्चात उन्होंने स्वयं ही अपने को "ओशो" कह प्रचारित कर दिया।

अब अति संक्षेप में इनके एक प्रवचन का सार साँझा कर रहा हूँ जिसमें ओशो ने बताया कि मृत्यु को ठीक तरह से दो प्रकार से जाना जा सकता है। या तो प्रारब्ध को देखकर या फिर कुछ लक्षण और पूर्वाभास है जिन्हें देख कर जाना जा सकता है। प्रारब्ध पर वे आगे बताते हैं कि जब कोई व्यक्ति मरता है तो मरने के ठीक नौ महीने पहले कुछ न कुछ होता है यानि मृत्यु आने से नौ महीने पहले ही कुछ ऐसी घटनाएं होने लगती हैं जो इस बात का संकेत देती है। और यह प्रक्रिया बहुत ही सूक्ष्म होती है जिससे हम समझ नहीं पाते हैं क्योंकि साधारणतया हम जागरूक नहीं होते हैं।

प्रक्रिया को समझाते हुए उन्होंने कहा कि गर्भधारण व जन्म के बीच जो समय का अन्तराल है उतना ही समय मृत्यु को जानने का रहेगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रत्येक व्यक्ति में इसमें थोड़ी भिन्नता होती है। अगर कोई व्यक्ति गर्भ में नौ महीने रहने बाद जन्म लेता है, तो उसे नौ महीने पहले मृत्यु का आभास होगा। अगर कोई दस महीने गर्भ में रहता है तो उसे दस महीने पहले मृत्यु का अहसास होगा, कोई सात महीने पेट में रहता है तो उसे सात महीने पहले उसे मृत्यु का एहसास होगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गर्भधारण और जन्म के समय के बीच कितना समय रहा।

उन्होंने आगे बताया मृत्यु के ठीक उतने ही महीने नाभि चक्र में कुछ होने लगता है यानि क्लिक होना ही पड़ता है। इसका मतलब है कि गर्भ में आने और जन्म के बीच नौ महीने का अंतराल था : जन्म लेने में नौ महीने का समय लगा, ठीक उतना ही समय मृत्यु के लिए लगेगा। इसलिये जो लोग जागरूक हैं, सजग हैं, वे तुरन्त जान लेंगे कि नाभि चक्र में कुछ टूट गया है; और अब मृत्यु निकट ही है।

अन्त में बताना चाहता हूँ कि 'ध्यान' पर उन्होंने कई प्रयोग किये। एक सर्वेक्षण में उन्हें पिछली शती के 100 उन विशिष्ट ब्यक्तियों में माना गया है जिनमें आम जनता को बहुत प्रभावित करने की क्षमता रही है। आज उनकी पुण्य तिथि 19 जनवरी, 1990 पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

- गोवर्द्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

॥ दिन छब्बीस के ॥

खरगोश - से फुदक रहे ; दिन छब्बीस के ।
पंछियों - से चहक रहे ; दिन छब्बीस के ।

मौसम के जुल्म सहकर भी शूलों में -
गुलाबों - से महक रहे ; दिन छब्बीस के ।

पांवों में खुशियों की पहन पैजनियां -
बालकृष्ण - से ठुमक रहे ; दिन छब्बीस के ।

प्यासी धरती का कंठ तर करने को -
बादलों - से बरस रहे ; दिन छब्बीस के ।

खेल धूल में, लोट लगाकर धूल में -
हवाओं - से थिरक रहे ; दिन छब्बीस के ।

मधुमास के स्वागत में नाच खुशियों से -
कोंपलों - से पुलक रहे ; दिन छब्बीस के ।

हरी दूब पर धूप में चम - चम - चम - चम -
मोतियों - से चमक रहे ; दिन छब्बीस के ।

- अशोक आनन जी, मक्खी, शाजापुर (मध्य प्रदेश)



सर्दी में गुनगुनी धूप

बरसात गई सर्दी आई,
भाने लगे कंबल-रजाई।

ठंड हमको बहुत है लगती,
दौड़-भाग से तुरंत भगती।

पेड़ भी ठंड से काँपे हैं,
पंछी इधर-उधर भागे हैं।

नहाने का मन नहीं करता,
गुनगुनी धूप से मन भरता।

ठंड में कैसे स्कूल जाएँ,
सूझे न क्या बहाना बनाएँ।

शीत से काँपे जब तन मेरा,
साइकिल का करुँ इक फेरा।

कुछ भी खाए सभी हज़म है,
देखें किसमें कितना दम है।

दिनकर लगता अब प्यारा है,
और अलाव का सहारा है।

जितना पहनो लगता कम है,
ठंड बहुत के आँखें नम है।

- नलिन खोईवाल जी, इन्दौर (म.प्र.)

मानव जीवन धैर्य, समत्व और अनुभव का दर्शन

भारतीय परंपरा और सनातनी जीवन-दर्शन में अनुभव को सदैव मौन गुरु माना गया है। यहाँ शिक्षा केवल पुस्तकों या उपदेशों से नहीं, बल्कि जीवन के उतार चढ़ाव से प्राप्त होती है। उपनिषदों में कहा गया है कि **मनुष्य का वास्तविक ज्ञान तब जागृत होता है, जब वह अपने भीतर उतरकर अनुभवों का अर्थ खोजता है।** यही कारण है कि सनातन संस्कृति में अंतर्यात्रा स्वयं को समझने की यात्रा को सर्वोच्च साधना माना गया है। **अनुभव हमें हमारी सीमाओं से परिचित कराते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अग्नि तपाकर सोने को खरा करती है।**

सुख और दुख दोनों को समान भाव से स्वीकार करना समत्व गीता का मूल संदेश है। भगवान् कृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि **जीवन में आने वाले विपरीत परिस्थितियाँ हमें तोड़तीं नहीं, बल्कि हमारी आत्मशक्ति को प्रकट करती हैं।** इसलिए सनातन जीवन में दुख को केवल पीड़ा नहीं, वरन् आत्म विकास का अवसर माना गया है।

भारतीय परंपरा यह भी सिखाती है कि जीवन क्षणभंगुर है, और अनुभव ही वह धरोहर हैं जो हमें स्थायी समझ प्रदान करते हैं। सुख आता है तो हमें कृतज्ञ बनाता है, दुख आता है तो हमें धैर्य, विवेक और त्याग की शिक्षा देता है। ऋषि-मुनियों ने कहा है कि **जीवन एक सतत प्रवाह है अनित्य जिसमें हर अनुभव एक नया मोड़ लेकर आता है।** अंततः सनातनी दृष्टि में अनुभव जीवन का वह तृतीय नेत्र है जो बाहरी परिस्थितियों के पार जाकर भीतर का सत्य दिखाता है। यह हमें सिखाता है कि **उतार-चढ़ाव ही जीवन का स्वाभाविक क्रम है, और इन्हें स्वीकार करने में ही शांति, परिपक्वता और आत्मबोध का मार्ग खुलता है।**

- अमृतलाल मारु जी, 'रवि', इन्दौर (म.प्र.)

जीवन में हम कितना भी कर लें, फिर भी अक्सर हमें खुशी नहीं मिलती।
क्योंकि जहाँ तक भी हम पहुँचते हैं, वहाँ कोई न कोई हमसे आगे खड़ा दिखाई देता है।

यह हमारा जीवन है, पर सबसे ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम जीवन जीने का तरीका क्या चुनते हैं और हमारे परिवार की प्राथमिकताएँ क्या हैं।
हमसे हमारे अपने क्या चाहते हैं? और हम खुद से क्या चाहते हैं?

मान लीजिए हम इस दौड़ में सबसे आगे भी पहुँच जाएँ और वहाँ अकेले खड़े हों—तो ऐसी जीत से कौन-सी खुशी मिलने वाली है?

अपने लिए ऊँचे लक्ष्य ज़रूर रखें, पर दूसरों को देखकर प्रतिस्पर्धा न करें। हर व्यक्ति का काम करने का तरीका अलग होता है। हमें यह तय करना है कि हमारा तरीका क्या है—और उससे समझौता नहीं करना है।

हम अपने लिए लक्ष्य तय करें और उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ दें। लेकिन यदि हम यह सोचने लगें कि वह मुझसे बेहतर है, तो यही हमारी सबसे बड़ी भूल बन जाती है।

आज बहुत से लोग कहते सुनाई देते हैं— **“जीवन में सब कुछ मिल गया, फिर भी भीतर कुछ-कुछ ख़ाली है।”** तो यह ख़ालीपन क्या है?

वह ख़ालीपन है असुरक्षा की भावना— यह डर कि कहीं जो मिला है, वह हाथ से न निकल जाए।

सच तो यह है कि हम कभी भीतर से भरे हुए थे। पर लगातार दौड़ते हुए, तुलना करते हुए, तनाव पालते हुए—हम खुद को ख़ाली करते चले गए।

हर क़दम पर यह कहते हुए कि यह प्रतिस्पर्धा है, यह दौड़ है— हमने स्वयं के भीतर तनाव पैदा किया और भीतर से रिक्त होते चले गए।

जीवन जीने के क्रम में हमने अपने ही सिद्धांतों से समझौता किया— और हर समझौते के साथ थोड़ा-थोड़ा ख़ाली होते गए।

हर बात पर गुस्सा,
हर बात पर तनाव,
हर बात पर चिड़चिड़ाहट,
हर बात पर टकराव— और हम भीतर से और भी ख़ाली होते चले गए।

एक छोटे बच्चे को देखकर हमें आकर्षण होता है, क्योंकि वह ऊर्जा से भरा होता है, संभावनाओं से परिपूर्ण होता है।

उसे न कुछ खोने का डर होता है, न कोई चिंता, न कोई गुस्सा— और यही तीन चीज़ें हमें भीतर से ख़ाली कर देती हैं।

हम सोचते हैं कि बाहर से जो कुछ मिलेगा, वह हमें भर देगा— लेकिन सच्चाई यह है कि बाहर की उपलब्धियाँ बढ़ती रहीं और भीतर का संसार ख़ाली होता चला गया।

अगर सब कुछ पा भी लिया
और इस दौड़ में अकेले आगे निकल भी गए—
तो भी क्या लाभ, जब भीतर से सब कुछ ख़ाली हो चुका हो?

हे परमेश्वर...

जीवन की इस दौड़ में हमें यह ध्यान रखना था कि भीतर जो भरा है, उसे सुरक्षित रखते हुए बाहर की उपलब्धियाँ हासिल हों।

पर हमारा ध्यान दूसरों पर रहा—कि वे क्या कर रहे हैं।

इसी कारण तनाव में रहकर हम खुद को धीरे-धीरे ख़ाली करते चले गए।

यदि सब कुछ हासिल कर भी लिया और मन में खुशी न मिली— तो फिर उस उपलब्धि का क्या अर्थ?

जीवन में जो कुछ भी पाना है, ज़रूर पाएँ—
लेकिन एक नज़र अपने भीतर, अपनों पर और अपनी खुशी पर ज़रूर बनाए रखें।

— मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म.प्र.)

बसंत पंचमी पर्व: सरस्वती पूजा और बसंत ऋतु का आगमन

विद्या, वाणी और कला की देवी माता सरस्वती के जन्मदिवस के रूप में बसंत पंचमी का पर्व मनाया जाता है। यह पर्व न केवल ज्ञान और संगीत की आराधना का प्रतीक है, बल्कि बसंत ऋतु के आगमन का भी संदेश देता है। प्राचीन भारतीय परंपरा में वर्ष को छह ऋतुओं में बाँटा गया है, जिनमें बसंत ऋतु को सबसे प्रिय और उल्लासपूर्ण माना गया है।

बसंत ऋतु में प्रकृति अपने सौंदर्य के चरम पर होती है। पेड़ों पर नए पत्ते और रंग-बिरंगे फूल खिलने लगते हैं, खेतों में सरसों के पीले फूल सोने-से दमकने लगते हैं, जौ और गेहूँ की बालियाँ लहलहाने लगती हैं तथा आम के वृक्षों पर बौर आ जाता है। चारों ओर तितलियाँ और भँवरे मंडराने लगते हैं, जिससे वातावरण आनंद और उत्साह से भर जाता है। इसी उल्लास के साथ माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को बसंत पंचमी या श्रीपंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन माता सरस्वती की विधिवत पूजा की जाती है। कुछ क्षेत्रों में भगवान विष्णु और भगवान कामदेव की पूजा का भी विधान है।

माघ शुक्ल पंचमी से भारत में बसंत ऋतु का विधिवत आरंभ माना जाता है। बसंत पंचमी की पूजा सूर्योदय के बाद और दिन के मध्य से पूर्व, अर्थात् पूर्वाह्न काल में की जाती है। **शिक्षा प्रारंभ**

करने, नई विद्या या कला सीखने के लिए यह दिन अत्यंत शुभ माना गया है। पीला रंग समृद्धि, आशा और सकारात्मकता का प्रतीक है, इसलिए इस दिन पीले वस्त्र पहनने और पीले पुष्प अर्पित करने की परंपरा है।

धार्मिक ग्रंथों में बसंत पंचमी को स्वयंसिद्धि एवं अबूझ मुहूर्त माना गया है, अर्थात् इस दिन बिना पंचांग देखे शुभ कार्य किए जा सकते हैं। विद्यार्थी इस दिन अपनी पुस्तकों और अध्ययन सामग्री की पूजा करते हैं तथा छोटे बच्चों को पहला अक्षर लिखना सिखाया जाता है। इस प्रकार बसंत पंचमी ज्ञान, संस्कृति और प्रकृति के सौंदर्य का अनुपम उत्सव है।



बसंत पंचमी: विद्या आरंभ और सरस्वती पूजन विधि

www.

भारतीय गणतंत्र दिवस: लोकतंत्र की शक्ति और संविधान का सम्मान

26 जनवरी भारत के इतिहास का एक गौरवपूर्ण और प्रेरणादायक दिन है। इसी दिन 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ और हमारा देश एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बना। यह दिन हमें हमारे संविधान निर्माताओं—विशेषकर डॉ. भीमराव अंबेडकर—के अथक परिश्रम और दूरदृष्टि की याद दिलाता है।

गणतंत्र दिवस केवल एक पर्व नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों, कर्तव्यों और समानता का प्रतीक है। इस दिन नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर भव्य परेड का आयोजन होता है, जिसमें भारत की सैन्य शक्ति, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता का अद्भुत प्रदर्शन देखने को मिलता है। देशभर में विद्यालयों, संस्थानों और सार्वजनिक स्थलों पर ध्वजारोहण, सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति गीतों के माध्यम से इस दिन को उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

26 जनवरी हमें यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि हम संविधान के मूल्यों का सम्मान करें, देश की एकता बनाए रखें और एक सशक्त, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

**मिट्टी की सौगंध लेकर जिन सपनों ने आकार पाया,
उन शहीदों की साँसों से यह गणतंत्र सजाया।
तिरंगे में लिपटी हर धड़कन कहती है आज,
भारत केवल देश नहीं, हमारी आत्मा का है साज।**

संविधान हमारा स्वाभिमान, गणतंत्र हमारी पहचान





145. भगवान श्रीराम ने हनुमान जी को पहचान के रूप में क्या दिया?

– भगवान श्रीराम ने अपना नाम अंकित अंगूठी पहचान के रूप में हनुमान जी को सौंपी।

146. हनुमान जी को ही अंगूठी क्यों दी गई?

– सीता माता द्वारा गिराए गए आभूषणों की स्थिति से यह अनुमान लगाया गया कि रावण का निवास दक्षिण दिशा में है। हनुमान जी दक्षिण दिशा की ओर

जाने वाले दल के सदस्य थे। सुग्रीव द्वारा हनुमान जी पर व्यक्त किए गए विश्वास तथा महावीर हनुमान के बल, बुद्धि, व्यवहार-चातुर्य और नीति-शास्त्र के गुणों को देखकर भगवान श्रीराम को पूर्ण विश्वास हो गया कि हनुमान जी अवश्य सीता माता की खोज कर लेंगे।

147. सभी दलों को सीता माता की खोज के लिए कितना समय दिया गया?

– एक माह।

148. सफलता न मिलने पर निराश वानर दल को अंगद ने कैसे प्रेरित किया?

– एक माह बीत जाने पर भी सफलता न मिलने से हतोत्साहित वानर दल को प्रेरित करते हुए अंगद ने कहा— “उत्साह, सामर्थ्य और मन में हिम्मत न हारना—ये कार्य की सिद्धि कराने वाले सद्गुण हैं। कर्म में लगे रहने वाले को उसका फल अवश्य मिलता है, अतः अत्यंत खिन्न होकर उद्योग छोड़ देना कदापि उचित नहीं है।”

149. दक्षिण दिशा के दल को खोज के दौरान ऋक्षबिल नामक गुफा में किनसे भेंट हुई?

– स्वयंप्रभा नामक धर्मपरायणा तपस्विनी से, जो वहाँ तपस्या में रत थीं। मयदानव द्वारा निर्मित उस मायावी गुफा से स्वयंप्रभा ने ही वानर दल को सुरक्षित बाहर निकालकर समुद्र तट पर पहुँचाया।

150. समुद्र तट पर वानरों ने क्या किया?

– एक माह की अवधि में सीता माता की खोज न कर पाने के कारण दल के नायक अंगद सहित अधिकांश वानर निराश हो गए और समुद्र तट पर उपवास कर प्राण त्यागने का निश्चय किया। तत्पश्चात् हनुमान जी ने नीति एवं भेदनीति द्वारा वानरों का उत्साहवर्धन किया।

151. समुद्र तट पर वानरों की किससे भेंट हुई?

– गृध्रराज जटायु के बड़े भाई संपाति से।

152. रावण द्वारा सीता माता के हरण एवं निवास का पता किसने बताया?

– गृध्रराज संपाति ने बताया कि रावण महर्षि विश्रवा का पुत्र और कुबेर का भाई है। वह यहाँ से चार सौ कोस दूर स्थित लंकानगरी का राजा है। लंका चारों ओर से समुद्र से सुरक्षित है और देवी सीता उसकी कैद में हैं।

153. लंका किस पर्वत पर बसी हुई है? – त्रिकूट नामक पर्वत पर।

154. समुद्र की विशालता देखकर निराश वानर दल को किसने प्रेरित किया?

– किष्किंधा के युवराज एवं दलनायक अंगद ने कहा – “जो पराक्रम के अवसर पर विषादग्रस्त हो जाता है, उसका तेज नष्ट हो जाता है और वह पुरुषार्थ सिद्ध नहीं कर पाता।”

155. समुद्र लांघने के विषय में विभिन्न वीरों ने अपनी क्षमता कैसे बताई?

– गज – 10 योजन

गवाक्ष – 20 योजन

शरभ – 30 योजन

ऋषभ – 40 योजन

अंगद – 100 योजन (परंतु वापसी की शक्ति को लेकर संदेह)

गंधमादन – 50 योजन

मैन्द – 60 योजन

द्विविद – 70 योजन

मुषेण – 80 योजन

जाम्बवान – 90 योजन

156. जाम्बवान ने समुद्र लांघने का क्या उपाय बताया?

– उन्होंने कहा कि यह कठिन कार्य कपिश्रेष्ठ वीर हनुमान ही कर सकते हैं, जो उस समय एकांत में शांत भाव से बैठे थे।

157. हनुमान जी को अपने बल का ज्ञान क्यों नहीं रहता था?

– बाल्यावस्था में अत्यंत चंचल होने के कारण ऋषियों ने हनुमान जी को यह श्राप दिया था कि उन्हें अपने बल का बोध नहीं रहेगा। दूसरे के द्वारा स्मरण कराए जाने पर ही उन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान होगा। यह श्राप आगे चलकर वरदान सिद्ध हुआ, जिससे हनुमान जी सदा भगवान श्रीराम की भक्ति में लीन रहे।

क्रमशः... (अगले माह)

– माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)



जीवन का सत्य:
पहले लोग कहते थे –
ज्ञान ही शक्ति है
आजकल कहते हैं –
Wi-Fi ही शक्ति है!



डायट शुरू करने की
तारीखें इतनी बदलती हैं
कि कैलेंडर भी
कन्फ्यूज हो गया है।



ज़िंदगी ने पूछा:
क्या चाहिए?
मैंने कहा:
थोड़ा सुकून और
थोड़ा Wi-Fi।



रानो: सुन, आज सब्ज़ी में
नमक कम है।
बानो: कोई बात नहीं, ऊपर से
गॉसिप डाल दे... स्वाद अपने-
आप आ जाएगा।



बॉस: काम में मन क्यों
नहीं लगता?
पप्पू: सर, मन तो
लगता है...
बस काम में नहीं।



बेटा: पापा, मोबाइल ने
मेरी ज़िंदगी बदल दी।
पापा: कैसे?
बेटा: अब डॉट सुनने के
लिए सामने खड़ा नहीं
होना पड़ता।





अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय : आज की आवश्यकता

भारत विज्ञान और अध्यात्म दोनों क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ रहा है, विश्व गुरु कहलाया है। आज वैज्ञानिक युग के बदलते संदर्भ में हमें अध्यात्म और विज्ञान की व्याख्या करते हुए दोनों के अंतःसूत्रों पहचानना है और उन मूल्यों और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाना है जो हमारे आनंदमय सुरक्षित भविष्य को प्राणवंत बनाने की

शक्ति रखते हैं। हमारी गौरवमयी वैज्ञानिक अध्यात्म परंपराओं से युवाओं को परिचित कराना हुए उन्हें इस दिशा में चिंतन के लिए प्रेरित करना ही हमारा पावन उद्देश्य है।

मानव के समक्ष प्रकृति अपने अनंत चमत्कारिक और रहस्यमय रूपों में उपस्थित रही है। **आकाश, पृथ्वी, अनंत जल राशि युक्त समुद्र, सूर्य, चंद्र, ग्रह-नक्षत्र, विविध वर्णी वनस्पतियां, जीव-जंतु, ऋतु चक्र, जीवन-मृत्यु आदि सभी मानव की जिज्ञासा और कौतूहल के केंद्र रहे।** प्राकृतिक घटनाओं ने उसे रोमांचित करते हुए यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया गोचर भौतिक जगत का निर्माण और संचालन करने वाली कोई सर्वशक्तिमान अदृश्य शक्ति है। जिसका आभास तो हम पाते हैं, पर आंखों से देख नहीं सकते। प्रकृति के कण-कण में एक दिव्य नाद प्रवाहित है, पर हम कानों से उसे सुन नहीं पाते हैं। इन सब कल्पनाओं और जिज्ञासाओं ने मानव को उस विश्व शक्ति को निकटता से जानने के लिए अकुल बनाया और हम कह सकते हैं कि यहीं से अध्यात्म का जन्म हुआ।

'आत्म' शब्द में अधि उपसर्ग लगाने से अध्यात्म शब्द बना है, इसीलिए अध्यात्म का अर्थ है आत्म विषयक ज्ञान। अर्थात् आत्म विषयक विज्ञान ही अध्यात्म है।

गीता के आठवें अध्याय में अर्जुन श्री कृष्ण से प्रश्न करते हैं कि ब्रह्म क्या है और अध्यात्म क्या है? श्री भगवान कहते हैं **"अक्षर ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते"**। गीता रहस्य में तिलक जी ने इसकी व्याख्या दी है कि कभी नष्ट न होने वाला तत्व ही ब्रह्म है और जीवात्मा ही अध्यात्म है।

महर्षि व्यास कहते हैं कि विश्व में मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है और उसमें परम चेतना को उभारने वाली विद्या ही अध्यात्म है। अध्यात्म की व्याप्ति में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी

पुरुषार्थ समाहित हैं, जिनका लक्ष्य जीवन को सुखी, समृद्ध और आनंदमय बनाते हुए पूर्णता प्रदान करना है। **स्वामी विवेकानंद** ने कहा है कि **अध्यात्म एक ब्रह्म विचार है, ज्ञान तत्व है, आत्मज्ञान है।** आत्मा और परमात्मा को समझने की प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना, मानना और दर्शन करना है।

आज भ्रमवश **हमने वैज्ञानिक प्रगति को ही मानव प्रगति का पर्याय मान लिया है**, जिसके परिणाम भी कम भयावह नहीं हैं। यह सही है कि आज विज्ञान ने मानव की सर्जन शक्ति को अपने चरम पर पहुंचा दिया है, इससे जीवन अत्यंत सुविधा पूर्ण और वैभवशाली बन गया है। साथ ही मानव का स्वार्थ, महत्वाकांक्षा, अहंकार और अधिकार भाव भी निरंतर प्रबलतम होता गया है। उसकी संहारक शक्ति बढ़ती जा रही है, विनाशकारी आयुधों का अंबार लगा है। आज विज्ञान की गति हमारे विचारों की गति या चिंतन की गति को भी मात दे रही है। लगने लगा है कि हमारा संपूर्ण अस्तित्व ही उसकी चपेट में आता जा रहा है।

मैं मानती हूं कि जब किसी राष्ट्र की संस्कृति और परंपराएं नवीन उदित होती शक्तियों और विचारधाराओं के समक्ष बौनी प्रतीत होने लगे, तो उसे आने वाले संकटों की पदचाप के रूप में पहचान कर निश्चित ही सचेत हो जाना चाहिए। आत्मविश्लेषण करना चाहिए। अपने अतीत के आलोक में वर्तमान को परखना और भविष्य की योजनाएं बनाना चाहिए।

आज हमारा देश इसी संक्रमण के, संकट के दौर से गुजर रहा है। ये संकट जीवन के सभी क्षेत्रों में हैं। मेरी दृष्टि में इन संकटों का मूल कारण है कि हम अपनी संस्कृति, परंपरा, संस्कार और साहित्य से विमुख हो गए हैं, इसलिए विश्वग्राम में रहते हुए भी कितने अकेले रह गए हैं। ऐसी विषम स्थिति में आवश्यक है कि हम **अंतः-बाह्य का संतुलन बनाए रखें।** मेरी दृष्टि में इस संतुलन का एक मात्र मार्ग है विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय। आज सभी क्षेत्रों के संकटों का समाधान एक ही है - **परिष्कृत अध्यात्म का उन्नयन।** विज्ञान और अध्यात्म दोनों संसार की सर्वोपरि शक्तियाँ हैं, इनका सामंजस्य सहयोग और समन्वय ही मनुष्य को प्रेयस और श्रेयस दोनों मार्ग पर अग्रसर कर सकेगा।

हम जानते हैं कि विज्ञान तथ्यों के अन्वेषण- परीक्षण की प्रयोग आधारित पद्धति है, इसलिए यह किसी भी सत्य को अंतिम नहीं मानता है। प्रत्येक सत्य को नए आयाम से देखने का प्रयत्न करता है और इसलिए यह आविष्कारों और तकनीकी विकास का आधार बनता है।

अध्यात्म अंतः का विज्ञान है जो प्रकृति के रहस्यों को, मानव की अंतः प्रक्रियाओं को विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से समझता है और मानव की उन्नति के नए आयामों का

उद्घाटन करता है। विज्ञान का आधार तर्क है तो अध्यात्म अनुभव, भावना और विश्वास पर आधारित है। विज्ञान हर तथ्य का विश्लेषण करता है उसे तोड़कर जानता है और अध्यात्म संश्लेषण करता है तथ्यों को जोड़कर देखता है।

हम कह सकते हैं कि विज्ञान तर्क पर आधारित कला है और अध्यात्म अनुभव पर आधारित विज्ञान। जिस प्रकार भौतिक जीवन को स्वस्थ और सुविधा युक्त बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक अन्वेषणों की आवश्यकता है, उसी प्रकार मन और चिंतन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए अध्यात्म परम आवश्यक है क्योंकि अध्यात्म कल्याणकारी मानव मूल्यों को ग्रहण करते हुए जीवन की उच्चतम संभावनाओं के अन्वेषण में प्रवृत्त रहता है।

हमारे जीवन के दो पक्ष हैं आंतरिक और बाह्य। अध्यात्म आंतरिक पक्ष को उन्नत बनाता है- मानसिक शांति, सुख, प्रसन्नता और आनंद की प्राप्ति का हेतु बनता है और विज्ञान बाह्य पक्ष को समृद्ध और सुविधा युक्त बनाता है। मेरा विश्वास है कि आंतरिक पक्ष ही जीवनानंद का स्रोत है, इसके अभाव में मानव ऐश्वर्यशाली होने पर भी भटकता रहता है। ऐश्वर्य हमें सुविधा संपन्न तो बना सकता है पर सुखी नहीं।

यदि हम चाहते हैं कि मानव सम्यक् और उदात्त जीवन की ओर अग्रसर हो, जिसमें उसकी संपूर्ण संभावनाएं साकार हो सकें, तो हमें अध्यात्म और विज्ञान की पारस्परिक पूरकता को समझना ही होगा।

अध्यात्म में हमारी मानसिक संरचना और कार्यप्रणाली को बदलने की चमत्कारिक क्षमता है। इस क्षमता का पूरा उपयोग करने के लिए विज्ञान सम्मत सोच की परम आवश्यकता है।

अध्यात्म हमें मन के विकारों और शत्रुओं से लड़ने की ताकत देता है। हमारे दृष्टिकोण का परिष्कार करके सकारात्मक और उदार बनाता है। हमें चिंतन की उत्कृष्टता देता है। किसी भी घटना को विस्तृत आयाम में देखने की दृष्टि देता है।

अध्यात्म मन की शांति, संयम, धैर्य, सहनशीलता देते हुए स्वयं पर और ईश्वर पर भी सहज विश्वास करना सिखाता है, हमें चारित्रिक दृढ़ता प्रदान करता है।

हम जानते हैं कि अध्यात्म ने ही हमारी संस्कृति को समन्वयवादी स्वरूप दिया है। हमें यज्ञमयी जीवन दृष्टि दी है। वस्तुतः विज्ञान और अध्यात्म दोनों का ही उद्देश्य मानव जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करना है। दोनों की उत्पत्ति सृजन के मूल मंत्र को लेकर हुई है। ये सृष्टि के बाह्य रूप और अंतरात्मा को जोड़ने वाले दो अनुपम उपहार हैं।

हमारे यहाँ इन दोनों में कभी प्रतिरोध का भाव नहीं रहा है- गीता का तो एक अध्याय ही ज्ञान विज्ञान योग की प्रस्तुति है। हमारे देश भारत का विश्वास प्रारंभ से ही सह अस्तित्व में रहा है। **भारत ने विज्ञान और अध्यात्म के सह अस्तित्व का पोषण किया है- परा विद्या, अपरा विद्या सभी को साथ लेकर आगे बढ़ा है।**

स्वामी विवेकानंद कहते थे आधुनिक विज्ञान वस्तुतः अध्यात्म भावना की ही अभिव्यक्ति है, क्योंकि इसमें पूरी निष्ठा के साथ सत्य को समझने का प्रयास किया जाता है। अब वह समय निकट आ गया है जब विज्ञान को नए क्षेत्र में प्रवेश करना होगा। विज्ञान अब भौतिक जगत तक ही सीमित नहीं रहेगा, चेतना जगत भी वैज्ञानिक प्रयोग और परीक्षण का महत्वपूर्ण विषय बनेगा। हम जानते हैं कि काल बाह्य चिंतन के बोझ को लेकर प्रगति संभव नहीं है। इसीलिए **विज्ञान हमारी मूल्य आधारित सनातन आध्यात्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण तत्व रहा है।**

जैसे पौराणिक काल में समुद्र मंथन में दैत्यों और देवताओं के सहयोग से 14 बहुमूल्य रत्न निकले थे, वैसे ही आज विज्ञान और अध्यात्म के समवेत मंथन से मानव बहुमूल्य शक्तियां प्राप्त कर सकता है।

विश्व के मूर्धन्य विचारक भी स्वीकार कर रहे हैं कि **दो महाशक्तियों (विज्ञान और अध्यात्म)** के मध्य जो खाई पैदा हो गई है, उसे पाटने के लिए प्रबल प्रयत्न किए जाना चाहिए। एक से सर्वथा पृथक् रहकर, दूसरा अपना अस्तित्व तक बनाए नहीं रह सकेगा - जैसे पदार्थ के बिना चेतना पंगु है और चेतना की प्रखरता के बिना पदार्थ अंधे के समतुल्य है। किंतु जब अंधे और पंगु परस्पर सहयोग से बढ़ते हैं सफलता का कठिन मार्ग सहजता से पार कर जाते हैं।

आज विज्ञान और अध्यात्म दोनों महाशक्तियों के समन्वय की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। **गंगा यमुना और सरस्वती के सम्मिलित होने से बने त्रिवेणी संगम की तरह विज्ञान, अध्यात्म और मानवता के समन्वय से एक नवीन ज्ञान का उद्भव हो रहा है, जिसे विवेकानंद जी ने दिव्य ज्ञान के नाम दिया है।** अध्यात्म मनुष्यों में धैर्य, संतोष और संयम को स्थापित करता है, वसुधैव कुटुम्बकं, अहिंसा परमोधर्मः और आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना अर्थात् समरसता और आनंद का संचार करता है।

आज सुखद और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकने योग्य अध्यात्म को प्रतिष्ठित करने के लिए आवश्यक है कि समाजसेवी संस्थाएँ और सुधारक सामने आएँ, और निहित स्वार्थी वाले संतो, महंतों, बाबाओं से जनता को सावधान करें।

आज दुर्बुद्धि वश जैसे विज्ञान का गलत प्रयोग हो रहा है, महाशक्तियाँ विश्व युद्ध की स्थितियाँ पैदा कर रही हैं, वैसे ही तथाकथित **संत का मुखौटा पहने कुछ स्वार्थी जन अध्यात्म का दुरुपयोग करके व्यक्ति और समाज को दूषित और भ्रमित कर रहे हैं।**

आज हमें विज्ञान को भावात्मक रूप से समृद्ध बनाना होगा, जिससे उसके विनाशक प्रयोग को नियंत्रित किया जा सके। हम यह समझ सकें कि **प्रकृति और मानव दोनों को संरक्षित करने में ही भविष्य की समस्याओं का समाधान है-** इसलिए आवश्यक है कि हम **अध्यात्म दर्शन को विज्ञान के आलोक में प्रस्तुत करें और विज्ञान को अध्यात्म से संयुक्त कर विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करें।**

मुझे **आधुनिक वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन** का एक साक्षात्कार याद आ रहा है जिसमें उन्होंने एनर्जी की खोज के बाद पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हुए कहा था, **"जो कुछ खोजा गया है वह भारत के पुराणों में पहले से मौजूद है"**। उन्होंने **भारतीय ऋषि कणाद** का उल्लेख किया था और **वेदों को आधुनिक विज्ञान की नींव** के रूप में स्वीकार किया था।

हमारी आध्यात्मिक परंपराओं में वैज्ञानिकता के अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। आज युवा पीढ़ी के समक्ष इन सभी स्थापनाओं, मान्यताओं और सिद्धांतों की व्याख्या प्रस्तुत करना अनिवार्य हो गया है। हमें अपनी भावी पीढ़ी को समझाना है कि वैज्ञानिक प्रगति हमारी क्षमताओं के विकास के लिए आवश्यक है, किंतु हमें यांत्रिक ढर्रे में नहीं ढलना है, हमारी क्षमताओं और कौशल का क्षरण नहीं होने देना है। हमें यह समझना और समझाना होगा कि प्रकृति और मानव दोनों को संरक्षित करने में ही भविष्य की समस्याओं का समाधान है।

भारतीय अध्यात्म चिंतन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों और उनकी वैज्ञानिकता को प्रकाश में लाना, उनके महत्व और संदर्भों की पुनराख्या करना आज हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए- जिससे हम भावी पीढ़ी को विकसित, कल्याणकारी, सुखद और शांतिपूर्ण जीवन का उपहार दे सकें। उत्कर्ष पर पहुँचाने में अपनी भूमिका निभा सकें।

महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपने कालजयी महाकाव्य कामायनी में कहा है -

जीवन का उद्देश्य नहीं है, शांत भवन टिक रहना।

किंतु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं है।

- डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव जी, इंदौर (म. प्र.)



सामग्री : काले तिल – ½ किलो, सफेद गुड़ – ¼ किलो, खजूर (बीज निकले हुए) – 150 ग्राम, सूखा नारियल (कद्दूकस किया हुआ) – ½ कप, मगज बीज – ½ कप, खसखस – ¼ कप, गन्धोड़ा पाउडर – 2 चम्मच, सोंठ पाउडर – 2 चम्मच, तिल का तेल – 200 ग्राम, बादाम, काजू – 50 ग्राम

विधि: सबसे पहले काले तिल को मिक्सर में लगभग आधा मिनट दरदरा पीस लें। अब इसमें गुड़ और खजूर डालकर 1 मिनट तक पुनः पीसें।

इसके बाद खसखस, कद्दूकस किया हुआ नारियल, सोंठ पाउडर, गन्धोड़ा पाउडर, तिल का तेल तथा थोड़े-थोड़े बादाम और काजू डालकर मिश्रण को अच्छी तरह पीस लें। अब एक बाउल में बचे हुए बादाम, काजू और थोड़ी खसखस डालें। उसके ऊपर तैयार मिश्रण डालकर अच्छे से दबाकर सेट करें। बाद में रिमोल्ड करके परोसें।

घरेलू नुस्खे -

- ✓ आँखों के सामान्य विकार दूर करने के लिए आँवले के रस में शहद मिलाकर सेवन करें।
- ✓ आँवला स्कर्वी रोग में अत्यंत लाभकारी है। विटामिन-C की पूर्ति के लिए इसका प्रभाव शीघ्र दिखाई देता है।
- ✓ आँवले में विटामिन-C प्रचुर मात्रा में होता है। एक कप करेले के रस में एक चम्मच आँवले का रस मिलाकर नियमित रूप से दो माह तक पीने से मधुमेह में लाभ मिलता है।
- ✓ आँवले का प्रयोग च्यवनप्राश आदि बनाने में होता है, जिससे शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

रसोई युक्तियाँ -

- ✓ दूध उबालते समय एक चुटकी खाने का सोडा डालने से फटने की संभावना नहीं रहती।
- ✓ दूध उबालने वाले बर्तन के किनारों पर घी या मक्खन लगाने से दूध उफनकर बाहर नहीं गिरता।
- ✓ यदि दूध बासी हो, तो उबालने से पहले उसमें एक चम्मच मक्के का आटा मिला लेने से दूध नहीं फटता।
- ✓ जले हुए दूध में तीन-चार पान के पत्ते डालकर पुनः गरम करने से जलेपन की गंध दूर हो जाती है।



वंदे मातरम्



“वंदे मातरम्” भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आध्यात्मिक आधार था। **बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत मातृभूमि को देवी के रूप में पूजने की भावना** से ओतप्रोत था। इसने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक भक्ति-भावना में परिवर्तित किया। बंग-भंग आंदोलन से लेकर क्रांतिकारी संघर्षों तक यह गीत स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा बना। आज भी यह राष्ट्रीय सम्मान, एकता और स्वाभिमान का प्रतीक है। “वंदे मातरम्” ने भारत की आत्मा को

जागृत किया और यह सदा हमारी राष्ट्रीय चेतना की धड़कन बना रहेगा।

“वंदे मातरम्” केवल एक गीत नहीं था, बल्कि यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्र की आत्मा का स्वर बन गया। **बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत उनकी प्रसिद्ध कृति आनंदमठ (1882)** में शामिल किया गया था। इसमें भारत माता को एक देवी के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिसने औपनिवेशिक दमन से त्रस्त भारतीय जनमानस को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधा। इस गीत ने न केवल भावनात्मक स्तर पर भारतीयों को जोड़ा बल्कि स्वतंत्रता की मांग को एक नैतिक और धार्मिक अधिकार के रूप में स्थापित किया। यह वह समय था जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था, और समाज निराशा, विभाजन तथा अधीनता की मानसिकता में जी रहा था। ऐसे में “वंदे मातरम्” ने भारतवासियों के भीतर दबी हुई स्वाभिमान की चिंगारी को प्रज्वलित किया।

इस गीत की पहली दो पंक्तियाँ—**“सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलाम् मातरम्”**—भारत की भौगोलिक सुंदरता और समृद्धि का वर्णन करती हैं। यहाँ भूमि केवल मिट्टी का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक ऐसी माँ के रूप में चित्रित की गई है जो अपने बच्चों को जल, अन्न और जीवन देती है। यह भावनात्मक रूपक उस समय के लोगों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी था। **भारतीय समाज के लिए मातृत्व का भाव सबसे पवित्र था, और जब देश को ‘माँ’ के रूप में देखा गया, तो देशभक्ति स्वाभाविक रूप से ‘भक्ति’ का रूप ले ली।** यह भाव ही “वंदे मातरम्” को एक साधारण गीत से आध्यात्मिक आंदोलन में परिवर्तित करता है।

भारत में उस समय राजनीतिक चेतना का आरंभ हो रहा था, परंतु उसमें जनसामान्य की भागीदारी सीमित थी। शिक्षित वर्ग में राष्ट्रवाद के बीज अंकुरित हो रहे थे, लेकिन उनमें भावनात्मक ऊर्जा का अभाव था। “वंदे मातरम्” ने इस रिक्तता को भरा। इसने राष्ट्रवाद को

केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वरूप दिया। यह गीत गाया गया तो लोगों ने पहली बार अनुभव किया कि वे किसी बाहरी सत्ता के अधीन नहीं, बल्कि अपनी ही मातृभूमि के संतान हैं, जिन्हें स्वतंत्र रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है।

1905 में जब ब्रिटिश सरकार ने बंगाल का विभाजन किया, तब “वंदे मातरम्” बंग-भंग आंदोलन का मुख्य नारा बन गया। विद्यार्थी, महिलाएँ, व्यापारी, किसान—सबके होंठों पर यही शब्द गूँजने लगे। रैलियों, सभाओं और जुलूसों में जब यह गीत सामूहिक रूप से गाया जाता था, तो लोगों के भीतर अजेय शक्ति का संचार होता था। अंग्रेज़ सरकार को यह गीत इतना खतरनाक लगा कि उसने इसे सार्वजनिक रूप से गाने पर प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन प्रतिबंध के बावजूद यह गीत और भी लोकप्रिय होता गया। स्कूलों, कॉलेजों और मंदिरों में गुप्त रूप से “वंदे मातरम्” गाया जाने लगा। यह गीत प्रतिरोध, स्वाभिमान और एकता का प्रतीक बन चुका था।

भारत जैसे विविधता भरे देश में जहां भाषा, धर्म और जाति के आधार पर समाज बँटा हुआ था, वहाँ “वंदे मातरम्” ने सबको एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। इस गीत ने सभी वर्गों को एक साझा सांस्कृतिक प्रतीक दिया—‘मां’। चाहे बंगाल हो, पंजाब, गुजरात या तमिलनाडु—हर प्रदेश ने इस गीत में अपनी मातृभूमि की छवि देखी। इसने राष्ट्रीय एकता की नींव रखी, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम का सबसे बड़ा आधार बनी।

“वंदे मातरम्” के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद को एक नई भाषा और अभिव्यक्ति मिली। इसने राजनीतिक संघर्ष को धार्मिक उत्सव का रूप दे दिया। यह केवल विदेशी शासन के विरोध का प्रतीक नहीं था, बल्कि अपने भीतर के आत्मसम्मान को पहचानने का आह्वान भी था। इस गीत ने भारतीय समाज को यह बोध कराया कि पराधीनता केवल बाहरी शासन की नहीं, बल्कि मानसिक गुलामी की भी जंजीर है। जब लोग मातृभूमि को देवी के रूप में पूजने लगे, तब स्वतंत्रता केवल राजनीतिक लक्ष्य नहीं रही, बल्कि यह एक आध्यात्मिक कर्तव्य बन गई।

इस गीत ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कई महान नेताओं को गहराई से प्रभावित किया। श्री अरविंदो घोष ने कहा था कि “वंदे मातरम्” वह मंत्र है जो हमें स्वराज्य की प्राप्ति तक ले जाएगा। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इसे अपने इंडियन नेशनल आर्मी का राष्ट्रीय गीत बनाया। भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी जब जेल में जाते या फाँसी का सामना करते, तो उनके होंठों पर “वंदे मातरम्” होता। इसने युवाओं के भीतर बलिदान और वीरता की भावना को प्रबल किया।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह गीत भारतीय पुनर्जागरण का प्रतीक बना। उस समय **रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अबनिन्द्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस** जैसे कलाकार और लेखक भारतीय पहचान को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। **“वंदे मातरम्”** ने उन्हें एक साझा प्रेरणा दी। भारतीय चित्रकला, नाट्यकला, संगीत और साहित्य में मातृभूमि का रूपांकन इसी गीत से प्रभावित हुआ। यह वह काल था जब भारतीय संस्कृति अपने खोए गौरव को पुनः खोजने में लगी थी और **“वंदे मातरम्”** उसका सबसे प्रभावशाली प्रतीक बना।

ब्रिटिश शासन के लिए यह गीत विद्रोह का प्रतीक था। अंग्रेज़ इसे धार्मिक विभाजन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते रहे, परंतु भारतीयों के लिए यह गीत किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत का प्रतीक था। इसमें हिन्दू देवी-देवताओं के रूपक अवश्य थे, परंतु उसका उद्देश्य किसी धर्म को श्रेष्ठ बताना नहीं, बल्कि मातृभूमि को पवित्रता के स्तर पर प्रतिष्ठित करना था। यह गीत उस समय के सामाजिक-सांस्कृतिक मानस में राष्ट्र की नई परिभाषा गढ़ रहा था—एक ऐसी परिभाषा जिसमें धर्म से ऊपर देशभक्ति थी।

“वंदे मातरम्” की शक्ति उसकी सरलता और भावनात्मक गहराई में निहित थी। इसकी प्रत्येक पंक्ति भारत के सौंदर्य और गरिमा का बखान करती है। **“त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी”** जैसी पंक्ति ने यह संकेत दिया कि भारत की भूमि केवल कोमल नहीं, बल्कि शक्तिशाली भी है—जो अपने बच्चों की रक्षा करने में सक्षम है। इसने भारतीय नारी शक्ति और राष्ट्रशक्ति दोनों को एक रूप में देखने की प्रेरणा दी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब भी आंदोलन कमजोर पड़ता, **“वंदे मातरम्”** की गूंज लोगों में फिर से ऊर्जा भर देती। यह गीत लोगों के दिलों में इतना गहराई से बस गया कि यह स्वतंत्रता की प्रतीक ध्वनि बन गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में इसे गाना परंपरा बन गई। महात्मा गांधी ने इसे भारत की आत्मा का गीत कहा। हालांकि कुछ धार्मिक समुदायों ने इसकी कुछ पंक्तियों पर आपत्ति की, फिर भी अधिकांश भारतीयों के लिए यह राष्ट्र की भावना का सर्वोच्च प्रतीक बना रहा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारत का संविधान तैयार हुआ, तब **“वंदे मातरम्”** को राष्ट्रीय गीत के रूप में मान्यता दी गई, जबकि **“जन गण मन”** को राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकृत किया गया। संविधान सभा की चर्चाओं में यह स्पष्ट किया गया कि **“वंदे मातरम्”** का सम्मान राष्ट्रगान के समान रहेगा, क्योंकि इसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में अनुपम योगदान दिया था।

आज भी जब यह गीत गाया जाता है, तो उसकी ध्वनि में वही जोश, वही भक्ति और वही मातृभाव झलकता है जो स्वतंत्रता सेनानियों के समय था। यह गीत हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र केवल राजनीतिक सीमाओं का नाम नहीं, बल्कि **एक जीवंत संस्कृति, एक साझा भावना और एक आत्मा है जो हमें एक साथ जोड़ती है।**

“वंदे मातरम्” ने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद के बीज बोए और उन्हें एक ऐसे वृक्ष में परिवर्तित किया जिसकी छाया में भारत ने स्वतंत्रता का फल पाया। इसने यह सिद्ध किया कि जब कोई राष्ट्र अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी मातृभूमि को आत्मा के रूप में पहचान लेता है, तो कोई भी बाहरी शक्ति उसे लंबे समय तक दास नहीं बना सकती। यह गीत **भारतीय स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि भारतीय आत्मजागरण का गीत है।**

इस गीत ने भारतीय जनमानस को यह सिखाया कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी है—अपनी संस्कृति, अपनी मातृभूमि और अपने समाज के प्रति। **“वंदे मातरम्”** में गूंजती आवाज़ केवल एक कालखंड की नहीं, बल्कि युगों-युगों तक प्रेरणा देने वाली पुकार है। यह पुकार हमें बार-बार स्मरण कराती है कि राष्ट्र की सच्ची शक्ति उसकी एकता, उसकी आस्था और उसके स्वाभिमान में निहित है।

अंततः कहा जा सकता है कि **“वंदे मातरम्”** ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक भावनात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दिशा दी। यह गीत भारतीय राष्ट्रीयता का वह ज्योति-पुंज बन गया जिसने अंधकारमय औपनिवेशिक काल में प्रकाश फैलाया। आज भी जब इसकी धुन बजती है, तो प्रत्येक भारतीय के भीतर एक अलौकिक गर्व, श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव जाग उठता है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है—जो हमें यह सिखाती है कि जब तक **“वंदे मातरम्”** की भावना जीवित है, भारत की आत्मा अमर है।

“वंदे मातरम्” भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आध्यात्मिक आधार था। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत मातृभूमि को देवी के रूप में पूजने की भावना से ओतप्रोत था। इसने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक भक्ति-भावना में परिवर्तित किया। **बंग-भंग आंदोलन** से लेकर क्रांतिकारी संघर्षों तक यह गीत स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा बना। आज भी यह राष्ट्रीय सम्मान, एकता और स्वाभिमान का प्रतीक है। **“वंदे मातरम्”** ने भारत की आत्मा को जागृत किया, यह सदा हमारी राष्ट्रीय चेतना की धड़कन बना रहेगा।

- डॉ सत्यवान सौरभ जी, भिवानी (हरियाणा)

दिमाग को खूब पढ़ाना लेकिन
दिल को हमेशा अनपढ़ ही
रखना... ताकि यह '
भावनाओं' को समझने में
हि़साब किताब न करे....!

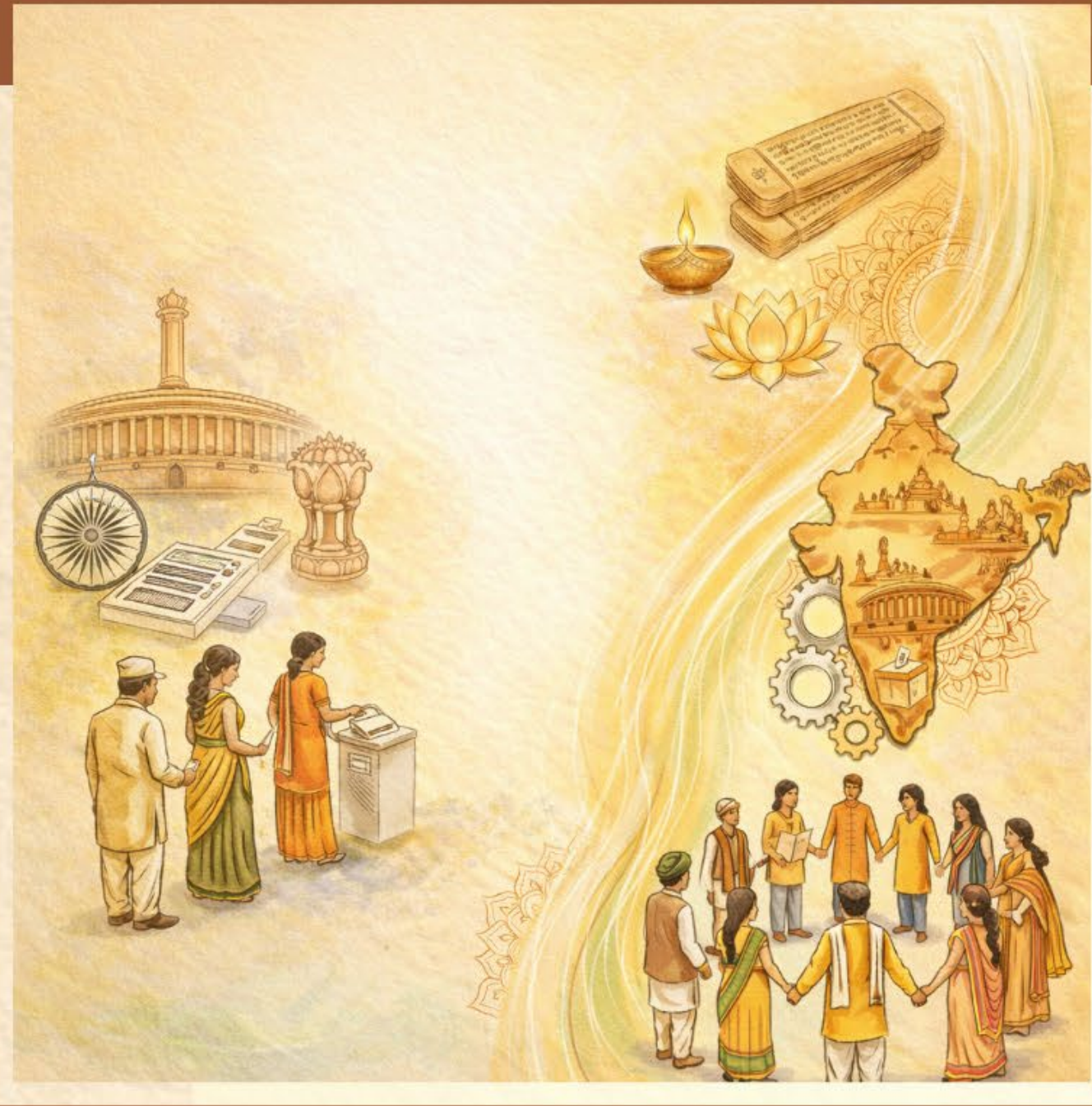
दो चीज़ों की गिनती करना
छोड़ दो खुद का दुःख दूसरों
का सुख जिंदगी आसान हो
जाएगी....!

जिंदगी का आनंद, अपने
तरीके से ही लेना चाहिए..
लोगों की खुशी के चक्कर
में तो, शेर को भी सर्कस
में-नाचना पड़ता है....!

स्वभाव भी इंसान की
अपनी कमाई हुई
सबसे बड़ी
दौलत है....!

जुबान सबके पास होती है,
लेकिन 'बात' और
'बकवास' में फर्क
होता है....!

कितना भी किसी से दूर हों,
मगर अच्छे स्वभाव के कारण
आप किसी न किसी पल यादों
में आ ही जाते हो....!



वैदिक संस्थाएँ : सभा और समिति..

वैदिक काल में सभा (वृद्धजनों की परिषद) और समिति (सामान्य जनसभा) जैसी संस्थाएँ सामूहिक निर्णय का माध्यम होती थीं। ये प्रारंभिक लोकतांत्रिक रूप थे, जहाँ नीतिगत विमर्श होता था। इस प्रकार "लोकतांत्रिक मूल्यों की जड़ें वैदिक काल में पाई जाती हैं"। ऋग्वेद (10.191.2) में "संगच्छध्वं संवदध्वं" (साथ चलो, साथ बोलो) का आह्वान समाज की सामूहिकता को दर्शाता है।

बौद्ध गणतंत्र में संघ व्यवस्था .. महाजनपद काल में वज्जि संघ जैसे गणराज्यों ने "संघ" व्यवस्था विकसित की थी। इन संघ में प्रायः निर्णय बहुमत से लिए जाते थे। अधिकारियों का चुनाव होता था। और न्यायिक प्रक्रिया सार्वजनिक एवं पारदर्शी होती थी। इन प्रणालियों से सिद्ध है कि भारत में लोकतंत्र पश्चिमी आयात नहीं है बल्कि स्वदेशी परंपरा का विकास है। तर्क और विवाद की परंपरा भारतीयता में रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में वाद विवाद और तर्क को शास्त्रार्थ के रूप में केन्द्रीय स्थान प्राप्त था। उपनिषदों में गुरु-शिष्य संवाद के वर्णन मिलते हैं। **बौद्ध दर्शन में "परीक्षा"** (तार्किक परीक्षण) पर बल दिया जाता था। जैन अनेकांतवाद में विभिन्न दृष्टिकोणों का समावेश दिखता है। लोकतंत्र के संवैधानिक मूल्यों की भारतीय जड़ें वैदिक अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार की गहराइयों तक फैली हुई हैं। संविधान के अनुच्छेद 19 द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की अवधारणा वैदिक ऋषियों के "**श्रुति-स्मृति**" चिंतन में निहित है। वसुबंधु जैसे दार्शनिकों ने "**विद्या** (ज्ञान) और **अविद्या** (अज्ञान) के बीच संघर्ष को सत्यान्वेषण का मार्ग माना। इसे ही बौद्ध परंपरा में "**कलाम मुक्त**" (तर्कपूर्ण विमर्श) के रूप में जाना गया।

समानता: वैदिक स्त्री-पुरुष समता से लैंगिक न्याय तक बराबर का दर्जा प्राप्त रहे हैं। संविधान के अनुच्छेद 14 में समानता का सिद्धांत वैदिक कालीन सामाजिक संरचना से प्रेरित है। "वैदिक काल महिला सशक्तिकरण का काल था क्योंकि महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे"। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने इस सामाजिक समरसता को साकार किया।

बंधुत्व: वसुधैव कुटुम्बकम् से धर्मनिरपेक्षता तक "बंधुत्व" अर्थात (Fraternity) की संवैधानिक अवधारणा "**वसुधैव कुटुम्बकम्**" (सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है) से व्युत्पन्न है। यह विचार सम्राट अशोक के शिलालेखों में "**सर्वजन हिताय**" के रूप में पाया गया है। गांधीवादी सर्वोदय

में यही विचार साकार हुआ। और भारतीय संविधान की प्रस्तावना में "बंधुता" शब्द से अभिव्यक्त किया गया है।

औपनिवेशिक विरासत:

मानसिक गुलामी का अभिशाप .."अंग्रेजों ने भारतीयों में यह भावना विकसित की कि हम सभ्यता, ज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में पश्चिम से कमतर हैं"। दासता का यह भाव आज भी मिशन एजुकेशन व्यवस्था के जरिए भारत में बोया जा रहा है।

- ✓ **अंग्रेजी का भाषाई वर्चस्व:** न्यायपालिका और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का प्रभुत्व दृष्टव्य है।
शिक्षा व्यवस्था: मैकाले मॉडल ने गुरुकुलों को हाशिए पर धकेल दिया है।
- ✓ **सांस्कृतिक विरूपण:** पश्चिमी जीवनशैली को "स्टेटस सिंबल" माना जाने लगा है।
- ✓ **पर्यावरणीय नैतिकता:** वैदिक पारिस्थितिकी विज्ञान ..वर्तमान जलवायु संकट का समाधान वैदिक ज्ञान में निहित है।
- ✓ **वेद प्रकृति की पूजा,** पर्यावरण संरक्षण जैसी प्रथाओं पर जोर देते हैं"। ऋग्वेद, नदियों को देवी मानकर उनकी रक्षा की संस्कारी वृत्ति का पोषक है। सूर्य, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वृक्ष, पहाड़, जल श्रोतों की पूजा के माध्यम से जन सामान्य में पर्यावरण चेतना के बीज बोना हमारी ज्ञान परंपरा का विलक्षण, अद्वितीय हिस्सा है।
- ✓ **अथर्ववेद:** वनस्पति और औषधियों का ज्ञान देता है।
- ✓ **स्मृतियाँ:** प्रकृति संरक्षण के नियम रेखांकित करती हैं।
- ✓ **सामाजिक समरसता:** सर्वधर्म समभाव की परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदैव "एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति" (सत्य एक है, विद्वान उसे अनेक नामों से पुकारते हैं) के सिद्धांत को प्रतिपादित किया है। यही भावना आधुनिक **"धर्मनिरपेक्षता"** का आधार बनी हुई है।

पुनरुत्थान के मार्ग :

- ✓ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उसके परे शिक्षा में क्रांति: भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश
- ✓ **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने "भारतीय ज्ञान प्रणाली" (Indian Knowledge System - IKS)** को पाठ्यक्रम में शामिल कर ऐतिहासिक पहल की है। वेद, उपनिषद, सांख्य दर्शन में निहित गूढ़ ज्ञान का अध्ययन तथा अनुसंधान वांछित है।
- ✓ **प्राचीन गणित (शुल्ब सूत्र), खगोल विज्ञान (आर्यभट्ट), चिकित्सा (चरक संहिता)** को पुनर्स्थापित करना, भाषिक पुनर्जागरण: संस्कृत और मातृभाषाओं को प्रोत्साहन देना समय की जरूरत है।
- ✓ **पंचायती राज और प्राचीन ग्राम स्वराज** - संविधान के 73वें संशोधन द्वारा स्थापित पंचायती राज व्यवस्था प्राचीन **"ग्राम सभा"** की आधुनिक अभिव्यक्ति है। स्थानीय स्व-

-शासन की परंपरा में सर्वसम्मति से निर्णय किये जाते हैं। सहमति ही लोकतंत्र का मंत्र है। इससे जनभागीदारी सुनिश्चित होती है।

- ✓ **वैश्विक मार्गदर्शन** - विश्व शांति की भारतीय दृष्टि हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आज के युद्ध रत विश्व को **"शांति पथ"** दिखा सकती है। अशोक का **"धम्म विजय"** अर्थात् नैतिक विजय सहअस्तित्व का मूल सिद्धांत है। महात्मा गांधी का अहिंसा सिद्धांत, योग द्वारा वैश्विक स्वास्थ्य, रामायण और गीता का ज्ञान मानव मात्र के लिये नैसर्गिक जीवन सिद्धांत हैं।
- ✓ **संभावनाएँ और निष्कर्ष** - भारतीय ज्ञान परंपरा और लोकतंत्र का सहविकास मानव को वरदान है। जब भारत 2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तब ज्ञान परंपरा के समन्वय से शिक्षा गुरुकुलों के आधुनिकीकृत मॉडल, न्याय में भारतीय न्याय संहिता में धर्मशास्त्रों के नैतिक सिद्धांतों का अनुपालन, अर्थव्यवस्था के विकास में **वसुधैव कुटुम्बकम्** के सिद्धांत पर राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता में भारत वैश्विक नेतृत्व की क्षमता रखता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा लोकतंत्र को यांत्रिक प्रक्रिया न मानकर नैतिक सभ्यता का निर्माण करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा कहती है **"सा विद्या या विमुक्तये"** (विद्या वह है जो संकीर्णता से मुक्त करे)। यही मुक्ति सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक लोकतंत्र का चरम लक्ष्य है। यह सार्वभौमिक सर्वकालिक प्रासंगिक ज्ञान है। **भारतीय लोकतंत्र** की सफलता इस बात में निहित है कि वह **"प्राचीन ज्ञान के साथ 'नवीन अनुसंधान तथा तकनीक' के समन्वय से एक जीवंत सभ्यता का निर्माण करे। 'ज्ञान-विज्ञान की जड़ें भारतीय संस्कृति और वांङ्मय में सदा से हैं'।** भारत के लोकतांत्रिक प्रयोग की सार्थकता तभी है जब वह अंग्रेजियत की "मानसिक गुलामी" से मुक्त होकर स्वदेशी ज्ञान की ओर आधुनिक संसाधनों को महत्व देते हुये लौटे। यही लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण भारत को विश्वगुरु के पद पर पुनः प्रतिष्ठित करेगा।

- विवेक रंजन श्रीवास्तव जी, भोपाल (म. प्र.)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!



Your Partner in Digital Growth

We build strong brands with creative design and smart strategy. From websites to digital marketing, we help your business grow online.

Simple solutions. Powerful results.

Design. Digital. Growth.

OUR SERVICES

- Branding
- Graphic Design
- Website Design
- Website Development
- Digital Marketing
- Bulk WhatsApp Messaging

CONTACT US AT

8080518745

www.mxcreativity.com | info@mxcreativity.com



अरावली की पर्वतमाला में साँसें आज भी जीवित हैं,
हर वन में प्रकृति की सदियों पुरानी सीखें लिखित हैं।
यदि इसे आज बचाया, तो भविष्य सुरक्षित पाएँगे हम,
वरना सूखी धरती पूछेगी – क्या खो दिया, क्यों चुप रहे हम।

